नारीलोक
जुलाई 2026
अंक 336

अध्यक्षीय कार्यालय
SUMAN NAHATA
G-67, Kirti Nagar, New Delhi, 110015
Mob no: 9818854120
Email: sumannahata67@gmail.com

अध्यक्षीय टंकार

सम्माननीय बहनों!
सस्नेह जय जिनेन्द्र!

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ जैसा मर्यादित, अनुशासित एवं सुव्यवस्थित धर्मसंघ मिला है। आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित मर्यादा, एक आचार, एक विचार और एक आचार्य की अनुपम परंपरा आज भी हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिशा प्रदान कर रही है। वर्तमान में पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन नेतृत्व में धर्मसंघ निरंतर विकास, जागरण और आध्यात्मिक उन्नयन की ओर अग्रसर है।

जुलाई माह अपने साथ एक विशेष आध्यात्मिक सौगात लेकर आता है। इसी माह से चातुर्मास का शुभारंभ होता है। वर्ष भर जन-जागरण एवं धर्मप्रभावना हेतु विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करने वाले साधु-साध्वीवृंद एक स्थान पर स्थिरवास करते हुए चार माह तक साधना, स्वाध्याय, तप, ध्यान और ज्ञानाराधना में लीन होते हैं। यह केवल चारित्रात्माओं के लिए ही नहीं, बल्कि हम सभी श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी आत्मावलोकन, आत्मपरिष्कार और आत्मविकास का अनुपम अवसर होता है।

प्रकृति भी मानो इस संदेश को अपने ढंग से अभिव्यक्त करती है। सावन-भादो के महीनों में जब मेघ धरती पर बरसते हैं, तब वे केवल खेतों का ही सिंचन नहीं करते, बल्कि जीवन में नवसृजन का संदेश भी देते हैं। बादल धरती से जल ग्रहण करते हैं और फिर विनम्रतापूर्वक उसे अनेक गुना बढ़ाकर वापस लौटा देते हैं। यही जीवन का शाश्वत सत्य है-जो हमें मिला है, उसे समाज, परिवार और मानवता के कल्याण में लौटाना ही सच्ची कृतज्ञता है।

महान प्रेरक वक्ता जोएल ओस्टीन का कथन है- "हमारा सबसे बड़ा दिन आगे है, पीछे नहीं।" चातुर्मास हमें अतीत की निराशाओं, शिकायतों और सीमाओं से ऊपर उठकर नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। यदि हम अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत कर दें, तो विकास की प्रक्रिया स्वयं हमारा मार्ग प्रशस्त करती चली जाती है। जैसा कि रशेल रूबेन ने कहा है- "विकास एक जैविक प्रक्रिया है, एक बार आप शुरुआत कर दें तो वह आपको कहीं-न-कहीं अवश्य ले जाएगा।"

विशेष रूप से हम महिलाओं के लिए चातुर्मास आत्मशक्ति के जागरण का पर्व है। नारी केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि संस्कारों की प्रथम शिक्षिका भी है। उसके विचार, उसका व्यवहार और उसकी जीवनशैली आने वाली पीढ़ियों के चरित्र का निर्माण करते हैं। इसलिए यह समय केवल धार्मिक आयोजनों में भाग लेने का नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व को अधिक संवेदनशील, संयमित और संस्कारित बनाने का भी है।

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में परिवारों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती पीढ़ियों के बीच संवाद और सामंजस्य की है। हमारे बुजुर्ग जीवन के अनुभवों की अमूल्य धरोहर हैं। वे भार नहीं, उपहार हैं। जिस प्रकार ईख में अनेक गाँठें होने पर भी उसका रस मीठा रहता है, उसी प्रकार बुजुर्गों के स्वभाव में कुछ कठोरता दिखाई दे, तब भी उनके भीतर अनुभव, स्नेह और शुभेच्छाओं का अथाह भंडार होता है। उनके प्रति सम्मान, मधुर व्यवहार और सहयोग की भावना हमारे परिवार को सुख, शांति और समृद्धि से भर सकती है।

चातुर्मास के इन पावन दिनों में हम अपने घरों को आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र बना सकते हैं। प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना, स्वाध्याय, प्रेरक साहित्य का अध्ययन, बच्चों को संस्कारमय वातावरण देना तथा बुजुर्गों के साथ समय बिताना ऐसे छोटे-छोटे प्रयास हैं जो परिवार की आत्मा को मजबूत बनाते हैं। चारित्रात्माओं के दर्शन, सेवा और उनके सान्निध्य से प्राप्त प्रेरणा जीवन की दिशा बदल सकती है।

प्रेरणादायी चिंतक टोनी रॉबिन्स का कथन है- "यदि आप बड़ी सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको स्वयं को अपनी सीमाओं से परे धकेलना होगा।" चातुर्मास भी हमें अपनी कमजोरियों, आलस्य, क्रोध, अहंकार और नकारात्मक प्रवृत्तियों से ऊपर उठने का आह्वान करता है। यह आत्मविजय का अभियान है।

आइए, इस चातुर्मास में हम सभी बहनें कुछ नए संकल्प लें-संयम को जीवन का आभूषण बनाएँ, सेवा को अपनी संस्कृति बनाएँ, बुजुर्गों के सम्मान को अपना धर्म बनाएँ और बच्चों के संस्कारों को अपनी प्राथमिकता बनाएँ। मैत्री, करुणा, सहिष्णुता और सामंजस्य के सूत्रों को जीवन में उतारते हुए हम अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में सहभागी बनें।

चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य से लाभान्वित होते हुए यह चातुर्मास हम सभी के जीवन में आत्मजागरण, सकारात्मक परिवर्तन और आध्यात्मिक उत्कर्ष का माध्यम बने-इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

मंगलमय चातुर्मास की शुभकामनाएँ।

स्नेहाकांक्षी
सुमन नाहटा

उषा

भिक्षुगाथा

संकट मोचन भिक्खु-स्याम

राजमलजी फोफलिया – जयपुर के जवेरी परिवार से थे। तत्त्वज्ञान के रसिया, तेरापंथ श्रद्धा में रचा पचा एक नाम, अड़ोल आस्थाशील, क्रिया-धर्म रुचि वाला, सैद्धान्तिक रहस्यों के ज्ञाता, हजारों पर छाप छोड़े जैसे निर्भीक, बेपरवाह, भक्तिवान, विश्वस्त, पक्का जवेरी।

राजमलजी की दूसरी शादी मध्यप्रदेश में हुई थी। वे एक बार ससुराल गये। बैठे-बैठे कोई बात चली। विनोद-विनोद में फोफलिया जी ने कह दिया – "साहब! भूत प्रेत निकालना तो अपने बाएँ हाथ का खेल है। अपने पास ऐसा अचूक मंत्र है जिसके आगे ऐसा वैसा अड़ंगा तो टिक ही नहीं पाता।"

भूत निकालना बात तो सामान्य थी, विनोद-विनोद में चली थी, पर हँसी-मजाक की बात इतना विस्तार पा जाएगी उन्हें क्या पता था।थोड़ी देर में 5-7 प्रमुख लोग आये और कहने लगे – "कँवर साहब! आपको स्थानक में चलना होगा। हमारे यहाँ एक संत को तकलीफ है, यह उपाधि तो आपको मिटानी ही होगी। सुना है आप भूत-प्रेत का इलाज जानते हैं। जल्दी चलो। अभी तो वह आया हुआ है।"

फोफलियाजी के लिए तो अब मना करना भी कठिन था और हाँ भरना भी कठिन। वे एक धर्म संकट में फँस गये। अज्ञात चेतना जागी। दो क्षण आँखें बंद की, मन ही मन बाबे का नाम सुमरा – भिक्खु स्याम, भिक्खु स्याम। इस संकट से उबारने वाला तू ही है रे बाबा। नटूं तो लाज तुम्हारी, जबान मेरी जाती है, न नटूं तो गेंद तुम्हारे पाले में है।

बात मेरी नहीं, बात है तेरापंथ की, तुम्हारे सेवक की । यह सोचकर वे दृढ़ मनोबल के साथ चलने को तैयार हो गये। उन्होंने उन संतों और श्रावकों से कहा, "यहाँ तेरा और बाइस का सवाल नहीं है। मैं तेरापंथी हूँ। आप से मेरी अर्ज है - मेरे साथ मंत्र जप आप सबको करना होगा। संतों को भी और श्रावकों को भी। हम जितना मन से एक धुन से मंत्र जप करेंगे, मंत्र का प्रभाव उतना ही तेज होगा और गलत आत्मा भाग छूटेगी।"

स्थानक के सभी संतों और श्रावकों ने साथ देने की हामी भरी। फोफलियाजी "भिक्खु स्याम, भिक्खु स्याम" करते ज्यों ही नजदीक गये प्रेत ने उछल कूद मचायी। और कहने लगा – "बंद करो यह सब बकवास, मार डालूँगा, खा जाऊँगा, तुम चाहे कितना ही करो, इसे नहीं छोड़ूँगा, नहीं छोड़ूँगा।"

फोफलिया जी ने पीड़ित संत के चारों ओर "भिक्खु स्याम" नाम की गोलाकार लकीर खींची और कहा – "अब निकल इसके बाहर।"

वे संत जिनमें प्रेत आत्मा थी, कोशिश करने के बाद भी बाहर नहीं निकल पाये। वे लकीर तक आते और सिसकियाँ भर-भर कर कहते – "अरे! यह तो आग है, आग।"

फोफलिया जी के साथ सारे संत - श्रावकों ने भरे स्थानक में जाप प्रारम्भ किया। "भिक्खु स्याम, भिक्खु स्याम।" प्रेत जोर-जोर से चिल्लाने लगा – "बंद करो, बंद करो। मैं जल रहा हूँ।"

परन्तु जाप अनवरत चलता रहा। अन्त में प्रेत छटपटाता हुआ चला गया। संतों ने खमत खामणा किये। और लोगों ने चमत्कारी करामाती नाम मान मन ही मन भिक्खु स्याम को नमस्कार किया। कुछ दिनों पश्चात् फोफलिया राजमलजी से किसी ने पूछा – यदि उस दिन बाबे ने सहायता न भी होती तो? वे बोले – "कैसे न की होती? आस्था हो, एकाग्रता हो, पक्का भरोसा हो, दृढ़ मनोबल हो तो बाबे का नाम हजार नजर परचा देता है, कोई आजमा कर देखे तो सही संकट मोचन भिक्खु-स्याम नाम को। इसलिए गीत में गाया है-

"दीपां रो दुलारो प्यारो हार हिया रो, संकट मोचन हारो अजमाल्यो जी ओ।
अपणो जाण वत्सलता स्यूं सावळ बुचकार कर, चम्पक नै एकरस्यां हिये लगाल्यो जी ओ।।
भिक्षु-भिक्षु-भिक्षु म्हारी आत्मा पुकारे भिक्षु रो म्हे साचो परचो पायो जी ओ।

गुरु वाणी

ठाणं में बताया गया है—तिविहा आराहणा पण्णत्ता, त जहा— णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा। 3/434

आराधना तीन प्रकार की होती है -1. ज्ञान आराधना, 2. दर्शन आराधना, 3. चरित्र आराधना।

शुद्ध साधना का ही अर्थ है आराधना। आराधना तीन प्रकार की बताई गई है-ज्ञान, दर्शन, चारित्र।

प्रश्न हो सकता है कि ज्ञान की आराधना कैसे की जाए? स्वाध्याय करना, शास्त्रीय अध्ययन करना, अध्यात्म विद्या के ग्रंथों का अध्ययन करना, ज्ञान कंठस्थ करना, कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन करना, ज्ञान-उपयोग में अपनी चेतना को बार-बार लगाना, अनुप्रेक्षा करना, तात्पर्य को पकड़ने का प्रयास करना आदि। भगवती सूत्र की वृत्ति में कहा गया है कि दोषरहित अनुपालना करना ही आराधना है।

ज्ञान की आराधना में दोष क्या हो सकते हैं? उच्चारण गलत करना, अक्षरों को आगे पीछे कर देना, आपस में मिला देना, ज्यादा लंबा बोलना, अनावश्यक शब्द जोड़ना, सही जगह विराम न लेना आदि ज्ञान के कुछ नियम हैं। उन नियमों का उल्लंघन होना ही ज्ञान की आराधना के दोष हैं। स्वाध्याय के भी कुछ अपने नियम होते हैं, जैसे शास्त्रों का स्वाध्याय अकाल में न करना।इस प्रकार ज्ञान के अतिचारों से बचकर ज्ञान की आराधना करनी चाहिए, स्वाध्याय करना चाहिए।

दूसरे प्रकार की आराधना है दर्शन आराधना। दर्शन आराधना का अर्थ है- दृष्टिकोण का सही होना। देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव रहे। अर्हत् भगवान वीतराग हैं, वे हमारे देव हैं। उनके प्रति श्रद्धा का भाव रहे। गुरु के प्रति श्रद्धा का भाव रहे, जैन धर्म के प्रति श्रद्धा रहे, यह दर्शन की आराधना हो जाएगी। जैन धर्म के प्रति यदि आस्था है तो फिर दूसरे धर्मों के प्रति अनावश्यक आकर्षण का भाव न रहे। परस्पर मिलना-जुलना तो व्यवहार है पर श्रद्धा जैन धर्म के प्रति होनी चाहिए।

दर्शन की आराधना में दोष- अपने धर्म के प्रति शंका होना, दूसरों की और भौतिक चीजों को देखकर आकृष्ट हो जाना और अपने धर्म को गौण करके दूसरों की प्रशंसा में लग जाना, इससे दर्शन की आराधना में दोष लग सकता है। और दूसरों के पीछे हो जाने से मिथ्यात्व भी आ सकता है। आदमी को दर्शन की आराधना भी दोषरहित करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि दर्शन की आराधना भी मोक्ष का साधन है।

तीसरे प्रकार की आराधना है चारित्र आराधना। चारित्र का अर्थ है जीवनभर के लिए सावद्य योग का त्याग। गृहस्थ जब सामायिक करते हैं तो एक मुहर्त तक सावद्य योग का त्याग होता है। वह उनका उतना चारित्र है। जहां चारित्र है, वहां तप तो अपने आप ही हो जाएगा। भगवती आराधना नामक ग्रंथ में चार प्रकार की आराधना का उल्लेख किया गया है-ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप।

चारित्र आराधना में दोष- उदाहरण के लिए बताया गया है कि किसी व्यक्ति ने सामायिक तो ले ली, परन्तु सामायिक लेकर वह सांसारिक बातों में लग गया, शादी-व्यापार आदि की बातों में लग गया, फोन से बात करनी शुरू कर दी आदि। ये सब चारित्र में दोष की बातें हो जाती हैं।

उत्कृष्ट ज्ञानाराधना एवं उत्कृष्ट दर्शनाराधना करने वाला व्यक्ति उसी भव में मोक्ष जा सकता है अथवा ऊंचे देवलोक में जा सकता है। परन्तु उत्कृष्ट चारित्र की आराधना करने वाला तो निश्चित रूप में मोक्ष ही जाएगा।

संदर्भ: 3 बातें ज्ञान की

संस्कार सरिता

शुभाशंसा!

एक साधक से पूछा गया- वर्षभर का Nucleus Period कौन-सा है। उत्तर मिला- चातुर्मास का समय। चातुर्मास हर वर्ष में तीन बार आते हैं – 1. चैत्र से आषाढ़ 2. श्रावण से कार्तिक 3. मार्गशीर्ष से फाल्गुन। सामान्यतया श्रावण मास से कार्तिक मास तक के समय को चातुर्मास की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह साधना का, आत्म-शुद्धि करने का स्वर्णिम अवसर है।

जैन परम्परा में चातुर्मास का अवसर विशेष प्रेरणा देने वाला है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल इस समय का लाभ उठाने का लक्ष्य सामने रखें। प्रतिदिन सामायिक का संकल्प, 15 मि. स्वाध्याय, 1 घंटा मौन, नवकारसी, रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान, द्रव्य सीमा, विगय वर्जन, प्रतिक्रमण, ध्यान आदि के अभ्यास से आत्मशुद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। रात्रि-शयन से आधा घंटा पूर्व मोबाइल का संवरण कर शुभ भावों के साथ 'आनन्दो' में वर्षति-वर्षति का मानसिक जप करते हुए आनन्द की अनुभूति करें।योगक्षेम वर्ष में यह संकल्प करें कि इस वर्ष चातुर्मास काल को आध्यात्मिक उत्थान की दृष्टि से अभूतपूर्व बनाना है।

जैन विश्व भारती, लाडनूं

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

शिखरोत्सव

ज्ञान, संस्कार और सृजन की अविस्मरणीय झलकियाँ, 20 जून 2026

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के रजत जयंती समारोह "शिखरोत्सव" के अंतर्गत ज्ञान-विस्तार, स्वाध्याय एवं तत्वचिंतन को समर्पित विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसी श्रृंखला में आयोजित "ज्ञान एक आराधना" सत्र में परियोजना की 25 वर्षीय गौरवशाली यात्रा को समर्पित विशेष स्मारिका परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी को भेंट की गई। परियोजना की निरंतर प्रगति, ज्ञान-विस्तार एवं अध्ययन-साधना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी एवं शासन श्री साध्वी जिनप्रभा जी ने इसे ज्ञान के प्रसार का प्रभावी माध्यम बताया। अपने मंगल उद्बोधन में आचार्य श्री महाश्रमण जी ने इस ज्ञानयज्ञ को चारों तीर्थों के लिए अत्यंत उपयोगी बताते हुए महिला मंडल को निरंतर ज्ञानात्मक गतिविधियों के विस्तार हेतु मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

इसी क्रम में अभातेमं द्वारा प्रस्तुत "आओ करें तत्वलोक की सैर" प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केंद्र रही। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं साध्वीप्रमुखा श्री जी ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर इसे ज्ञानवर्धक एवं रचनात्मक पहल बताया। प्रदर्शनी में तत्वज्ञान से जुड़े विविध विषयों 52 बोल, गतागत का थोकड़ा, 21 द्वार, थीम पार्क, आदि को आकर्षक मॉडलों एवं कलात्मक प्रस्तुतियों के माध्यम से सहज रूप में समझाने का प्रयास किया गया। इस प्रदर्शनी के आयोजन में डॉ. पुखराज जी सेठिया का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

ज्ञान, अध्ययन, स्वाध्याय और सृजनात्मक प्रस्तुति के इस समन्वित आयोजन ने शिखरोत्सव को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करते हुए उपस्थित जनसमूह को प्रेरणा, जागृति और ज्ञान-संपदा से समृद्ध किया।

गुरुदेव के सान्निध्य में जिज्ञासाओं का समाधान, 20 जून 2026

आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना रजत जयंती समारोह "शिखरोत्सव" का समापन "जिज्ञासा समाधान" सत्र के साथ युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में सम्पन्न हुआ। सत्र का संचालन अभातेमं महामंत्री श्रीमती रचना हिरण ने किया।

सत्र में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन एवं आध्यात्मिक जीवन से संबंधित विविध जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की और अपने अनुभव भी साझा किए। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने सरल, सारगर्भित एवं जीवनोपयोगी शैली में उनके समाधान प्रदान करते हुए विषयों को सहज रूप में स्पष्ट किया।

गुरुदेव के मार्गदर्शन ने उपस्थित जनों के ज्ञान को और अधिक परिष्कृत किया तथा अध्ययन एवं स्वाध्याय के प्रति नई प्रेरणा प्रदान की। जिज्ञासा और समाधान से परिपूर्ण यह सत्र आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना रजत जयंती समारोह का सार्थक एवं प्रभावी समापन सिद्ध हुआ।

शिखरोत्सव

"शुभमस्तु मंगलम्: चारित्र आत्माओं का दीक्षांत समारोह"

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के सान्निध्य में आयोजित "शुभमस्तु मंगलम्" सत्र श्रद्धा, शिक्षा एवं संस्कारों का प्रेरणादायी संगम रहा। प्राकृत मंगलाचरण के साथ शिखरोत्सव कार्यक्रम का आगाज़ अभातेमं अध्यक्षा श्रीमती सुमन नाहटा एवं महामंत्री श्रीमती रचना हिरण ने किया।

चीफ ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा संरक्षिका श्रीमती सायर बैंगानी ने "प्रगति से शिखर की यात्रा" वीडियो के माध्यम से आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना की 25 वर्षीय गौरवगाथा एवं विकास यात्रा का प्रेरणादायी अवलोकन कराया।

तत्त्व विज्ञ तत्त्व प्रचेता एवं तेरापंथ प्रचेता पाठ्यक्रमों को पूर्ण करने वाली लगभग 96 से अधिक साध्वियों एवं समणियों का भव्य दीक्षांत समारोह सभी के आकर्षण का केंद्र रहा।

शासन श्री साध्वी जिनप्रभा जी ने परियोजना के इतिहास एवं विकासक्रम पर प्रकाश डालते हुए इसके उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं। वर्षों से इस परियोजना के प्रायोजक रहे श्री सुमति जी गोठी ने भी अपने प्रेरक विचार व्यक्त किए। अभातेममं ट्रस्टी श्रीमती सोनाली पटावरी द्वारा प्रस्तुत पॉडकास्ट को भी विशेष सराहना प्राप्त हुई।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने तत्वज्ञान के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि तत्वज्ञान व्यक्ति के मन में पाप का भय जागृत कर उसे सदाचार की दिशा में अग्रसर करता है। उन्होंने इस आयोजन को "ज्ञान का महायज्ञ" बताते हुए सभी उपस्थित चारित्रात्माओं को साधुवाद प्रदान किया तथा आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना एवं अभातेमं की गतिविधियों के निरंतर विकास हेतु मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं।

अभातेमं के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की संचालिका श्रीमती राजुल मनोत ने सत्र का कुशल संचालन किया। यह सत्र सभी सहभागियों के लिए अविस्मरणीय एवं प्रेरणादायी अनुभव सिद्ध हुआ।

शिखरोत्सव

सहभागिता और प्रस्तुति के कुछ पल

जैन विश्वभारती, लाडनूं में आयोजित आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के रजत जयंती समारोह "शिखरोत्सव" के विभिन्न सत्रों ने ज्ञान, संस्कार, श्रद्धा, समर्पण और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अद्भुत वातावरण निर्मित किया। "ज्ञानोत्सव – सम्मान सत्र" में परियोजना की 25 वर्षीय गौरवगाथा को स्मरण करते हुए उन ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षकों एवं सहयोगियों का सम्मान किया गया, जिन्होंने वर्षों से ज्ञान-साधना की इस यात्रा को सशक्त बनाया। श्रद्धा और कृतज्ञता से ओतप्रोत इस सत्र ने उपस्थित जनसमूह को परियोजना के व्यापक प्रभाव एवं उपलब्धियों से परिचित कराया।

"कौन करेगा शिखरारोहण?" प्रतियोगिता ने पूरे सभागार में उत्साह और ऊर्जा का संचार कर दिया। प्रतिभागियों ने अपनी ज्ञान-संपदा, त्वरित उत्तर क्षमता एवं टीम भावना का उत्कृष्ट परिचय दिया। कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती हेमा चोरड़िया एवं कार्यसमिति सदस्य श्रीमती रुचिका पटावरी ने क्विज का कुशलतापूर्वक संचालन किया। रोचक प्रश्नों और दर्शकों की सक्रिय सहभागिता ने इस सत्र को अत्यंत जीवंत एवं मनोरंजक बना दिया।

शाम के सत्र में प्रस्तुत प्रेरणादायी नाटिका "दो राहें" ने जीवन के महत्वपूर्ण विकल्पों, सही दिशा के चयन तथा शिक्षा एवं संस्कारों की महत्ता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। कलाकारों के सशक्त अभिनय, भावपूर्ण संवादों और प्रभावी मंचन ने दर्शकों को भावविभोर कर आत्ममंथन के लिए प्रेरित किया।

इन सभी आयोजनों ने शिखरोत्सव को केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कार, व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक जागरूकता के महायज्ञ के रूप में स्थापित किया। गुरुदेव के पावन सान्निध्य में आयोजित यह आयोजन उपस्थित प्रत्येक सहभागी के लिए प्रेरणा, आनंद और आत्मविकास का अविस्मरणीय अवसर बन गया।

प्रेरक प्रसंग

◆ चिलम या सुराही ◆

एक बार की बात है। एक कुम्हार मिट्टी से कुछ बना रहा था। उसके हाथों में मिट्टी लिपटी हुई थी। तभी उसकी पत्नी उसके पास आई और पूछने लगी, "क्या बना रहे हो?" कुम्हार ने उत्तर दिया, "चिलम बना रहा हूँ। आजकल इसकी बड़ी माँग है, खूब बिकेगी।" पत्नी ने कहा, "गर्मियाँ आने वाली हैं। चिलम की जगह सुराही क्यों नहीं बनाते? सुराही भी खूब बिकेगी।" कुम्हार को पत्नी की बात उचित लगी। उसने मिट्टी को दोबारा गूँथना शुरू किया और उसे सुराही का आकार देने लगा।
जब मिट्टी को सुराही का आकार दिया जाने लगा, तो मिट्टी में से एक आवाज़ आई- "यह क्या कर रहे हो? पहले तो मुझे कुछ और रूप दे रहे थे, अब कुछ और आकार दे रहे हो।" कुम्हार ने मुस्कुराकर कहा, "मेरा विचार बदल गया है।
" मिट्टी ने उत्तर दिया, " तुम्हारा तो केवल विचार बदला है, लेकिन मेरी तो पूरी ज़िंदगी बदल गई। अगर मैं चिलम बनती, तो मेरे भीतर आग भरी जाती। मैं स्वयं भी जलती और दूसरों को भी जलाती। लेकिन अब मैं सुराही बन रही हूँ। मेरे भीतर शीतल जल भरा रहेगा। मैं स्वयं भी ठंडी रहूँगी और दूसरों को भी शीतलता दूँगी। और जो लोग मेरा ठंडा-ठंडा पानी पीकर तृप्त होंगे, वे तुम्हें भी धन्यवाद देंगे।"
बोध: एक विचार आपकी ज़िंदगी में भूचाल ला सकता है। तो एक विचार आपकी ज़िंदगी को खुशहाल भी बना सकता है।
जैन धर्म सिखाता है, शुद्ध रखो अपने विचार, फिर देखो कितना आनंदमय बनेगा तुम्हारा संसार।

◆ सुश्राविका – जड़ावबाई बाघरेचा ◆

जड़ावबाई का जन्म सं. 1922 में खेरवा (मारवाड़) के बख़्शीरामजी सोनी मरड़िया के यहाँ हुआ। उनका विवाह वहीं के जसराजजी बाघरेचा के साथ सम्पन्न हुआ। जसराजजी बाघरेचा वहाँ के राजघराने में प्रधान थे। परिवार धन-जन से परिपूर्ण था। दोनों ही परिवारों में धार्मिक संस्कार बहुत अच्छे थे। इसलिए जड़ावबाई में बाल्यावस्था से ही धार्मिक आस्था बहुत दृढ़ थी।
उनके 6 लड़के तथा 4 लड़कियाँ हुईं, परन्तु एक पुत्र के अतिरिक्त सभी बाल्यावस्था में ही कालकवलित हो गये। जब वे 34 वर्ष की पूर्ण युवती थीं, तभी सं. 1956 में उनके पति का भी देहावसान हो गया। तब उनके एकमात्र पुत्र भीखमचंदजी मात्र 7 वर्ष के थे।
जड़ावबाई ने उस विपत्ति में भी अपने संतुलन को नहीं खोया एवं जीवन की नश्वरता के प्रत्यक्ष उदाहरण से प्रेरणा लेकर उन्होंने स्वयं को धार्मिक क्षेत्र में अधिकाधिक समर्पित कर दिया। रात्रिकालीन चौविहार, प्रतिदिन पोरसी, पांचों तिथियों पर उपवास, श्रावण - भाद्र मास में एकांतर तप, आदि अनेक तपस्या लगातार करती रहती थी।
सं. 1980 में उनके पुत्र चिकमंगलूर (दक्षिण भारत में) चले गये। वहाँ उनकी अच्छी दुकान जम गई। माता जड़ावबाई ने वरद हाथों में पले पुसे भीखमचंदजी को धार्मिक संसार तो प्राप्त थे, परन्तु उनमें प्रमाद की भी कमी नहीं थी। अतः अवसर उपलब्ध होने पर भी वे प्रायः धार्मिक लाभ कमाने से वंचित रह जाते थे।
सं. 1984 में मुनि हुलासमलजी का चातुर्मास खेरवा में था। संयोगवश उसी काल में भीखमचंदजी का चिकमंगलूर से देश में आगमन हुआ। स्थानीय सभी स्वजनों तथा मित्रों से तो वे मिलते रहे, परन्तु संतों के पास जाने का कई दिनों तक अवसर नहीं आया। संतों ने उनकी माँ से पूछा कि तुम्हारे पुत्र देश में आये हुए हैं, फिर दर्शन कैसे नहीं किये? जड़ावबाई को उस प्रश्न का कोई उत्तर देते नहीं बना। वे अपने पुत्र के आलस्य पर बहुत लज्जित हुईं।
एक दिन जड़ावबाई ने तेले का पारणा था। वे निरंतर पोरसी करती और व्याख्यान सुनने के बाद ही पारणा करती थीं। व्याख्यान समाप्त हुआ। मुनिश्री ने सहज ही पूछ लिया – "भीखमचंदजी यहीं हैं या वापस चले गये?"
लज्जावनत होकर उन्होंने कहा – "वे हैं तो यहीं पर, किन्तु उनके आलस्य का कोई पार नहीं।" वे यहाँ से घर की ओर आ रही थी, तब पुत्र मार्ग में ही मिल गया। उन्होंने उपालंभ देते हुए कहा – "अब जब तक तुम प्रतिदिन दर्शन करने का नियम नहीं कर लोगे, तब तक मुझे पारणा करने का त्याग है।"
माँ के उस अप्रत्याशित त्याग ने उन्हें तत्काल संतों के पास जाने के लिए विवश कर दिया। वहीं से सीधे धर्मस्थान में गये, मुनिजनों के दर्शन किये और प्रतिदिन दर्शन करते रहने का संकल्प लिया। माँ की उस छोटी-सी प्रेरणा ने तत्काल संतों के साथ उनका सम्पर्क बढ़ाया और फिर आगे चलकर उन्हें एक धर्मपरायण श्रावक बना दिया।
पाँच-सात क्षणों के तिविहार संथारे के पश्चात् सं. 1984 चैत्र कृष्णा 14 को लगभग 62 वर्ष की अवस्था प्राप्त कर उन्होंने समाधि पूर्वक शरीर त्याग कर दिया। वंदन उनकी आस्था को, वंदन उनकी प्रेरणा को।

श्रावक संदेशिका

1. वही व्यक्ति संगठन मूलक संस्थाओं में पदाधिकारी व कार्यसमिति का सदस्य बन सकता है, जो जीवनभर के लिए मद्य-मांस सेवन का त्याग कर चुका हो तथा उसका पालन कर रहा हो।
2. गुटखा आदि नशीले पदार्थों के विक्रेता/निर्माता अथवा उभय को किसी भी संघीय संस्था में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आदि व चयनित रूप से ट्रस्टी जैसे पदों पर आसीन नहीं होने चाहिए।

संस्थागत सामान्य निर्देश

1. कोई भी स्थानीय शाखा मंडल, अन्य स्थानीय शाखा मंडल के कार्यक्षेत्र में किसी भी प्रकार की गतिविधि एवं कार्यक्रम की समायोजना न करे।
2. संस्था के प्रत्येक कार्यक्रम मर्यादापूर्ण एवं गरिमापूर्ण हों। ऐसा कोई भी कार्य न हो जिससे संस्था की गरिमा का खंडन हो।
   जैसे – किसी भी कार्यक्रम में जुम्बा, टैरो कार्ड, नृत्य आदि गतिविधियाँ न हों।

संस्था संविधान

पदाधिकारी व कार्यसमिति

1. मंडल में पदाधिकारी व कार्यसमिति की संख्या निम्नलिखित होगी-
   अध्यक्ष (1), उपाध्यक्ष (2), मंत्री (1), सहमंत्री (2), कोषाध्यक्ष (1), प्रचार-प्रसार मंत्री (1), संगठन मंत्री (1)इस प्रकार कुल पदाधिकारियों की संख्या अध्यक्ष सहित 9*होगी।
2. अध्यक्ष के अलावा शेष पदाधिकारी (उपाध्यक्ष से) कार्यसमिति के अंतर्गत ही होंगे।
3. अध्यक्ष के अतिरिक्त पदाधिकारी एवं अन्य कार्यसमिति सदस्य अध्यक्ष द्वारा मनोनीत किए जाएंगे। कार्यसमिति में कोई रिक्त स्थान होने पर भी वह पूर्णतया गठित मानी जाएगी।
4. निवर्तमान अध्यक्ष एवं मंत्री को कार्यसमिति में अनिवार्य रूप से रखा जाएगा।
5. निवर्तमान कार्यसमिति के कम से कम एक-तिहाई (1/3) सदस्यों को भी कार्यसमिति में रखना अनिवार्य होगा।

सेवा संवाद

◆ संवाद सेवा का, समर्पण का, संगठित नारी शक्ति का ◆

बागबान

यह केवल एक योजना नहीं, बल्कि जीवन के स्वर्णिम पड़ाव को उत्सव में बदलने का एक सुंदर प्रयास है। पिछले दो सत्रों में हमने मोटिवेशनल स्पीकर श्री पदमजीत सेहरावत एवं श्रीमती काजल ओझा वैद्य को आमंत्रित कर बागबान के माध्यम से वरिष्ठ बहनों के लिए प्रेरणा, सकारात्मकता, आत्मविश्वास और जीवन के प्रति नई दृष्टि निर्मित करने का प्रयास किया है। हमारा उद्देश्य केवल कार्यक्रम आयोजित करना नहीं, बल्कि एक ऐसा आत्मीय परिवार बनाना है जहाँ हर बहन स्वयं को सम्मानित, सक्रिय और जुड़ा हुआ महसूस करें।

आगामी समय में स्वास्थ्य, योग, कानूनी जागरूकता, मानसिक सशक्तिकरण, जीवन कौशल एवं व्यक्तित्व विकास जैसे अनेक विषयों पर सार्थक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। दिसंबर माह में परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में लाडनूं में बागबान सम्मेलन का आयोजन भी किया जाएगा। जहां हमारी वरिष्ठ बहनों को गुरु दर्शन एवं सेवा का सौभाग्य तो प्राप्त होगा ही, साथ ही रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से उन्हें अपनी प्रतिभा और अनुभव साझा करने का अवसर भी प्रदान किया जाएगा।

हमारा संकल्प है कि जीवन की इस सुंदर संध्या को नई उमंग, नए आत्मविश्वास और नई संभावनाओं से आलोकित किया जाए- क्योंकि उम्र नहीं, उमंग मायने रखती है।

संयोजिका: सुनीता जैन

स्किल अप: क्राफ्ट टू करियर

इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत राइटिंग स्किल्स की पहली कार्यशाला श्रृंखला सफलतापूर्वक संपन्न हुई। स्नेहा देसाई, ज़मा हबीब एवं आतिश कापड़िया जैसे दिग्गज लेखकों के मार्गदर्शन में महिलाओं ने लेखन कौशल, आत्मविश्वास एवं करियर संभावनाओं को नई दिशा दी। कार्यशाला को प्रतिभागियों का उत्साहपूर्ण एवं सकारात्मक प्रतिसाद प्राप्त हुआ। इसके पश्चात फाइनेंस कार्यशाला का प्रथम सत्र प्रीति राठी गुप्ता द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें ज़ूम पर 485 से अधिक एवं फेसबुक पर 5000 से अधिक प्रतिभागियों ने सहभागिताकी। सत्र ने महिलाओं को वित्तीय जागरूकता एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित किया। अब जल्द ही "वॉइस ओवर स्किल्स" पर अगली कार्यशाला आयोजित की जाएगी।

संयोजिका: रेखा सियाल

हमसफ़र

युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रेरणा से परिवारों में सामंजस्य, संवाद और संस्कारों को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सुमन नाहटा के निर्देशन में संचालित "हमसफ़र" प्रोजेक्ट दाम्पत्य जीवन को सुखमय एवं संतुलित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। प्रत्येक माह के तृतीय सप्ताह में आयोजित ऑनलाइन सत्रों में अनुभवी मोटिवेटर्स एवं रिलेशनशिप काउंसलर्स द्वारा दाम्पत्य जीवन से जुड़े विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। आवश्यकता अनुसार विशेषज्ञों की व्यक्तिगत काउंसलिंग की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है। यह प्रोजेक्ट परिवारों में प्रेम, विश्वास, समझ और आत्मीयता को बढ़ाने का प्रभावी माध्यम बन रहा है तथा अनेक दम्पत्तियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रहा है।

आज के व्यस्त जीवन में संवाद की कमी अनेक समस्याओं का कारण बनती है। "हमसफ़र" प्रोजेक्ट रिश्तों में संवेदनशीलता, परस्पर सम्मान और सहयोग की भावना को विकसित करने का प्रयास करता है। जब परिवार में सौहार्द का वातावरण होता है, तब जीवन में सुख, शांति और संतोष का संचार होता है। यही भावना इस प्रोजेक्ट की मूल प्रेरणा है।

संयोजिका: कनुप्रिया रांका

COMPUTER and AI Training Classes

21वीं सदी के डिजिटल युग में Advanced Technology केवल विलासिता ही नहीं, बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। इसी महत्व को समझते हुए अभातेममं के निर्देशन में महिलाओं के Personal व Professional Development के लिए AI Digital Marketing, AI Prompt engineering, Tally Prime, जैसे Courses शुरु किए गए। राष्ट्रीय अध्यक्ष व महामंत्री के प्रति हार्दिक आभार जिनकी उर्वर सोच से आज सैंकड़ों बहनें अपने जीवन व कार्यशैली को पूरी तरह परिष्कृत कर रही है।

जो AI आज के युग में हमें इतनी आकर्षित कर रही है, परन्तु इतनी Advance technique के बारे में हम जानते ही नहीं थे, उसे आसान, सहज व सरल बनाया IT GURU JI ने।

3 Batch संपन्न हो चुके हैं, participants के अनुभव से सुना व Reviews को पढ़ने सेजाना कि यह पहल उनके व्यक्तित्व में नए आत्मविश्वास, नई सोच और नई संभावनाओं का संचार करने में सफल रही है।

संयोजिका: रमन पटावरी

अंकुरम्

इस योजना को चरणबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने हेतु सतत प्रयास गतिमान हैं। विशेषज्ञ द्वारा विषय गत प्रशिक्षण दिया जा रहा है, सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता अभियान जन-जन तक पहुंचा जा रहा है, योग-ध्यान एवं सकारात्मक जीवन शैली के लिए माता को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

सांख्यिकीय झलक- → 12 online सत्र का सफलतापूर्वक आयोजन → 1000+ प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता → 4 whatsapp group संचालित → 2535+ बहनों का समूह → 1035+ गर्भवती माताओं का सक्रिय जुड़ाव → 5000+ सोशल मीडिया इंगेजमेंट → 60000+ views (1 माह में)

विशेष पहल- प्रोग्रामिंग सत्र में विजन बोर्ड के निर्माण एवं उनके अनुभव साझा करने के लिए प्रेरणा दी गई, जिससे क्विज और प्रतियोगिता में सहभागिता उत्साहपूर्ण बनी।जो गर्भस्थ माताएं इस प्रकल्प से जुड़ी उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हो रही है। किसी माता ने अंकुरम् को, आने वाली पीढ़ी को संवेदनशील, संस्कारी एवं स्वस्थ बनाने का एक सशक्त माध्यम बताया है। तो किसी को इस अभियान में समाज एवं परिवार में नैतिक मूल्यों के विकास की संभावनाएं दृष्टिगोचर हो रही है।

गुरुदेव की प्रेरणा, अभातेममं का सार्थक प्रयास , अंकुरम टीम का अहर्निश श्रम एवं स्थानीय शाखा मंडलो की सहभागिता अंकुरम् - गर्भशिशु संस्कार की परिकल्पना को सुनियोजित एवं सफल बना रहे हैं।

राष्ट्रीय संयोजिका: अदिति सेखानी

◆ महिला मंडल-करणीय कार्य ◆

संवाद: 51वाँ वार्षिक महिला सम्मेलन

दिनांक: 22, 23 एवं 24 सितम्बर 2026
स्थान: जैन विश्व भारती, लाडनूं

संवाद की शक्ति – संस्कारों की समृद्धि

जहाँ विचारों का मंथन हो, सहभागिता का संयोग हो और विकास का स्वरूप हो, वहीं संवाद अधिवेशन की सार्थकता है। बीते वर्ष में आप सभी से संपर्क मिला, विचार जुड़े, श्रद्धा बढ़ी, फिर संवाद हुआ और वैचारिक संकल्पों की यात्रा विश्वास के साथ आगे बढ़ती गई।
वार्षिक महिला सम्मेलन का हम सभी को उत्सुकता से इंतजार रहता है। इन तीन दिनों में प्रत्येक क्षण व्यक्तित्व एव आत्मिक विकास के अनेक अवसर प्रदान करता है। अतः सम्मेलन में सहभागिता हेतु निम्न नियम निर्धारित किए गए हैं-

प्रतिनिधित्व का आधार:

सदस्यों की संख्या	प्रतिनिधि सदस्य	सदस्यों की संख्या	प्रतिनिधि सदस्य
1 से 100 सदस्य	2 सदस्य	500 से 1000 सदस्य	5 सदस्य
100 से 300 सदस्य	3 सदस्य	1000 से 2000 सदस्य	6 सदस्य
300 से 500 सदस्य	4 सदस्य		

पदाधिकारी अथवा कार्य समिति की बहनों का आना ही अपेक्षित है।

आवश्यक निर्देश:

1. 15 अगस्त तक अपना पंजीकरण कराने वाली बहनों को ही अधिवेशन में आने की स्वीकृति दी जाएगी
2. पंजीकरण शुल्क : ₹1100/- एवं सदस्यों की ऑनलाइन सदस्यता जमा कराई जाएगी, प्रति सदस्य ₹10/- शुल्क देय होगा।
3. भुगतान की रसीद अपने साथ अवश्य रखें।
4. सम्मेलन का शुभारंभ 22 सितम्बर 2026 को दोपहर 2:00 बजे होगा, अतः सभी प्रतिभागी दोपहर 12:00 बजे तक पहुँचने का प्रयास करें।
5. अन्य आवश्यक सूचनाएँ अगस्त की नारीलोक में दी जाएगी।

संयोजिका	श्रीमती ममता रांका 94141 42924	श्रीमती सुनीता जैन 98685 16242	श्रीमती प्रीति घोषल 88004 46397
सह संयोजिका	श्रीमती नीतू गधैया 98292 65097	श्रीमती रितु चोपड़ा 98710 11401	श्रीमती रुचिका पटावरी 97432 06621

◆ युवती विभाग-करणीय कार्य ◆

जैन फूड फेस्टिवल

युवतियाँ अपनी पसंद का कोई भी जैन व्यंजन (जमीकंद वर्जित) तैयार करें तथा उसकी आकर्षक फोटो एवं 1 से 1.20 मिनट का वीडियो बनाकर प्रस्तुत करें। साथ में निम्न जानकारी अवश्य भेजें- ◆ व्यंजन का नाम ◆ रेसिपी (माप के साथ) ◆ पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक गुण

मूल्यांकन के आधार: ◆ रचनात्मकता प्रस्तुति ◆ जैन आहार के सिद्धांतों का पालन ◆ पौष्टिकता एवं स्वास्थ्य लाभ ◆ व्यंजन की विशेषता एवं नवाचार

◆ प्राप्त उत्कृष्ट रेसिपियों को संकलित कर "जैन पर्युषण रेसिपी ई-बुक" प्रकाशित की जाएगी।

◆ वीडियो अपनी ज़ोनल संयोजिकाओं को 20 जुलाई 2026 तक प्रेषित करें।"

आज की रेसिपी बनेगी कल की प्रेरणा - आइए, जैन पाक-परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ।"

चित्र चिन्तन प्रतियोगिता जुलाई 2026

Google link
https://forms.gle/NJMJTPhmz5K7DiXT8

प्रगति के साथ क्या पतन की है तैयारी? हे मानव तेरी महिमा भारी!
नित शांति की करता अभिलाषा, फिर भी रणभेरी बजाता भारी।
नित नीति बनाता न्याय की, और कर देता सीमा पार अन्याय की।
युद्ध, हिंसा, अराजकता के बहाव में, लोभ, दम्भ, असहिष्णुता के प्रभाव में,
क्या पा रहा है मानव तु? क्या खो रहा है मानव तु? इस मानवता के अभाव में।

निम्न प्रेषित Google Link के द्वारा Google Form खोलें और संलग्न चित्र के आधार पर आप अपने मौलिक विचारों को 8-10 कव्यात्मक पंक्तियों में प्रेषित करें।अपनी प्रस्तुति को एक सार्थक शीर्षक भी दें।

सूचना :

1. अभिव्यक्ति Google Form के माध्यम से सिर्फ़ हो।
2. प्रविष्टी भेजने की अन्तिम तिथि- 12 जुलाई 2026।
3. यह प्रतियोगिता बहनों के चिन्तन और लेखन के सामर्थ्य को और अधिक उर्वर बनाने हेतु किया जा रहा एक लघु प्रयास है।
4. अन्य जिज्ञासा हेतु संयोजिका श्रीमती शिल्पा बैद से 98108 58490 पर Whats app पर Message भेज कर सम्पर्क कर सकते हैं।
5. प्रतियोगिता में सभी उम्र की बहनें भाग ले सकती हैं।

आरोहण

◆ *By the girls, for the spirit within* ◆

प्रिय बेटियों,

सस्नेह जय जिनेंद्र।

जुलाई माह में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु, आचार्य डालगणी, आचार्य महाप्रज्ञ जी का जन्मदिवस है। सभी को श्रद्धानत भावभरा नमन। इसी माह में चातुर्मास भी प्रारंभ हो रहा है। सभी अपने जीवन को अध्यात्म के रंगों से सजाएं व धर्माराधना करें।

आप बेटियों ने केंद्र निर्देशित सभी कार्यक्रमों का सुव्यवस्थित आयोजन अपने अपने क्षेत्र में किया। आप सभी का उत्साह और संस्था के प्रति समर्पण सराहनीय है। अब समय आ रहा है 22 वें राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन संकल्प का। हम सभी पलकें बिछाएं आप सभी के स्वागत के लिए आतुर है। अधिवेशन का समय योगक्षेम का समय है। पूज्यवरों की असीम ऊर्जा और आशीर्वाद, राष्ट्रीय अध्यक्ष के अतुलनीय वात्सल्य पूर्ण मार्गदर्शन के साथ आने वाले समय में आप अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व में निखार लाकर आगे बढ़े।

सभी प्यारी बेटियों से यही कहना चाहते हैं हर कदम पर एक नई कहानी लिखती जा, ज्योति बन हर अंधेरे को मिटाती जा,मत रोक अपने हौसलों की उड़ान को, संकल्पों संग तेरापंथी गौरव से तकदीर अपनी सजाती जा।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित

कन्या मंडल संयोजिका	कन्या मंडल सह संयोजिका	अंतरराष्ट्रीय सह संयोजिका
श्रीमती हेमा चोरड़िया	श्रीमती जयश्री जोगड	सुश्री जागृति छाजेड, काठमांडू
98102 81155	90280 84801	+977 98186 78503

◆ कन्या मंडल-करणीय कार्य ◆

कन्या अधिवेशन में भाग लेने वाली सभी बेटियों से अनुरोध है कि वे निम्नलिखित सामग्री का अभ्यास/कंठस्थ करके आएँ-

कंठस्थ सामग्री:

- महाश्रमण अष्टकम्
- पंच परमेष्ठी वंदना
- 25 बोल

सामूहिक प्रस्तुतियाँ एवं गतिविधियाँ:

- स्किट
- मंगलाचरण
- रैली

साथ ही, पूर्व निर्देशानुसार "Eagerly Awaiting to be a Part of Kanya Adhiveshan" विषय पर अपना वीडियो भी भेजना है।

निर्देश:

- अपना मान्यता पत्र अवश्य साथ लाए ।
- अपने ओढ़ने-बिछाने का आवश्यक सामान साथ लेकर आएँ।
- अपनी व्यक्तिगत आवश्यकता की वस्तुएँ, जैसे नियमित दवाइयाँ आदि, अवश्य साथ रखें।
- कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 24-7-26 को दोपहर 2:00 बजे होगा तथा समापन दिनांक 26 -7-2026 को 1:00 बजे होगा। कृपया इसी के अनुसार अपने आगमन एवं प्रस्थान की टिकटें बुक करवाएँ।
- टिकट बुक होते ही कृपया जोनल कन्वीनर को सूचना दें।

कन्या मंडल की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

संगठन यात्रा:

6 जून को ईस्ट जोन की zoom पर संगठन यात्रा का आयोजन किया गया। श्रीमती हेमा चोरडिया ने राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन संबंधित जानकारी दी।

श्रीमती जयश्री जोगड़ ने करणीय कार्यों में एक्टिव पार्टिसिपेशन हेतु बेटियों को प्रोत्साहित किया। श्रीमती सोनिका पारख ने सूत्र संचालन किया। लगभग 79 बेटियों की उपस्थिति रही।

पंच परमेष्ठी गीतिका क्विज:

लगभग 29 क्षेत्रों ने इस क्विज का आयोजन किया, जिसमें लगभग 121 बेटियों की सहभागिता रही।

योगक्षेम वर्ष 2026-2027

♦ प्रज्ञा पाथेय-साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यशाला ♦

योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आयोजित साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का क्रम निरंतर जारी है। देशभर की विभिन्न शाखाओं से चयनित बहनों को प्रातः से सायं तक योग, प्रेक्षाध्यान, तत्वज्ञान, आदि का प्रशिक्षण पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि प्रवर, साध्वीवर्या जी एवं अन्य प्रबुद्ध चरित्रात्माओं द्वारा प्रदान किया जाएगा।

13 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक के चयनित शाखाओं की सूची इस प्रकार है:

13 SEPTEMBER TO 19 SEPTEMBER 2026

MAHARASHTRA	DONDAICHA	KHUSHBU BEDMUTHA	75889 47490
MAHARASHTRA	ICHALKARANJI	SHILPA BAFNA	90210 97937
MAHARASHTRA	JALGAON	VINITA SAMDARIA	76207 03060
MAHARASHTRA	JALNA	JYOTI SETHIYA	95795 20227
MAHARASHTRA	JAMNER	KANCHAN KUCHERIYA	94200 71083
MAHARASHTRA	JAYSINGPUR	ANJANA BARADIYA	96652 89444
MAHARASHTRA	KHAMGAON	SUREKHA CHOPRA	94229 27112
MAHARASHTRA	AMALNER	PRANITA JAIN	94203 46724
MAHARASHTRA	AMBAJOGAI	SUSHMA KATRELA	90969 95150
MAHARASHTRA	ANDHERI (MUMBAI)	POONAM PARMAR	97739 84124
MAHARASHTRA	AURANGABAD	BHAVNA SETHIYA	94237 81593
MAHARASHTRA	BEED	SAVITA MARLECHA	82750 80684

27 SEPTEMBER TO 3 OCTOBER 2026

MAHARASHTRA	BHUSAWAL	KIRAN KOTECHA	84219 54900
MAHARASHTRA	BOISAR	KANTA SOLANKI	96652 99945
MAHARASHTRA	CHALISGAON	POONAM CHAJJED	87669 55385
MAHARASHTRA	MUMBAI	VANITA DHAKAD	81042 40306
MAHARASHTRA	NAGPUR	PRAMILA MALOO	89830 35922
MAHARASHTRA	VILE PARLE (MUMBAI)	KUSUM KOTHARI	98215 19876
MAHARASHTRA	VIRAR (MUMBAI)	DIMPLE PARMAR	81497 67102
MAHARASHTRA	BHAYANDER (MUMBAI)	URMILA HINGAD	99205 60889
MAHARASHTRA	KHAR (MUMBAI)	MADHUBALA KACHHARA	91363 77750
MAHARASHTRA	LONAR	SARLA KOCHAR	94035 82905
MAHARASHTRA	MAHAD-MANGAON	SEEMA JAIN	70206 55042

आवश्यक निर्देश:

1. चयनित बहनें अपनी टिकटें समय पर बनवाकर संयोजिकाओं को सूचित करें। 2. आवास एवं भोजन की व्यवस्था अ.भा.ते.म.मं. द्वारा रहेगी।
3. सेवा में भाग लेने वाली प्रत्येक बहन के लिए सातों दिन निर्धारित गणवेश पहनना तथा अपना आधार कार्ड एवं एक पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाना अनिवार्य है।
4. प्रज्ञा पाथेय भावना चौका सेवा हेतु केवल 60 वर्ष तक की स्वस्थ बहनें ही अनुमत हैं।

मुख्य संयोजिका: श्रीमती प्रीति घोषल 88004 46397

संयोजिका: श्रीमती माला कातरेला 98417 25560 | श्रीमती सज्जन पारख 92334 23522 | श्रीमती राखी बैद 98242 99955 | श्रीमती चांद छाजेड़ 93275 49313 | श्रीमती साधना सामसुखा 90233 04863

जून माह की प्रतियोगिता के विजेता रहें:

महिला मंडल QUIZ

Total 1119 Responses

सपना बिनायकिया, वापी
रेखा जैन, उचाना मंडी
ज्योति गोयल, जावद
मंजू सेठिया, कोयंबटूर
मीना मेहता, सायरा
चंद्रा देवी पटवारी, मुलुंड
हेमलता घोषल, राजलदेसर
अनीता बैद, भागलपुर
गुलाबी महनोत, उदासर
सुशीला आर. दारदा, किलपॉक (चेन्नई)

कन्या मंडल QUIZ

Total 284 Responses

गरिमा जैन, गंगाशहर
सुहासी सुराणा, गुवाहाटी
भुवी महनोत, रोहिणी
आस्था मांड, नवसारी
खनक बोथरा, तिरूपुर
अनुश्री कोठारी, नाथद्वारा
काशवी चोरड़िया, रायपुर
भुवी कावड़िया, राजनगर
जयना जैन, महावीर नगर
गुंजन नाहटा, भिवानी

युवती विभाग - चित्र चिंतन QUIZ

Total 461 Responses

नीलम बरड़िया, मदुरई
नेहा गधीया, दलखोला
अर्चना बुरड़, जोधपुर सरदारपुरा
रेशमा बांठिया, नोएडा
भावना चोरड़िया, छत्रपति संभाजी नगर
शशि सुराना, गुवाहाटी
आरती धारीवाल, काठमांडू
अंजू चोरड़िया, साउथ हावड़ा
ममता खतंग, पचपदरा
सज्जन सेठिया, खुश्की बाग

विजेताओं को बहुत-बहुत बधाईयां।

सभी विजेताओं से निवेदन है कि कृपया अपना पता संबंधित संयोजिकाओं को WhatsApp कर दें।

प्रश्नोत्तरी
जुलाई 2026
QUIZ-9

महिला मंडल Quiz

सही उत्तर लिखें:

1. कच्चा मन कितने सेर का होता है?
2. सुगणी बाई के गांव का नाम क्या था?
3. कुम्हार ने चोरी का दोष किस पर लगाया?
4. स्वामीजी के चाचा पेमोजी कौन से संप्रदाय में दीक्षित हुए थे?
5. स.1843 की बही अनुसार एक मन चना कितने आने का था?
6. पत्नी वियोग के बाद स्वामीजी ने यावज्जीवन कौन सी प्रतिज्ञा कर ली?
7. भावितात्मा अनगार, जैसे प्रभावक व्यक्तियों की माता किसका स्वप्न देखती है?
8. स्वामीजी ने शारीरिक नग्नता से भी अधिक भंयकर कौन सी नग्नता बताई है?
9. संकवाली के जिन चौहान राजपूतो ने उस समय जैन धर्म स्वीकार किया, वे क्या कहलाए?
10. सिरियारी उपाश्रय के गुरांसा, जो स्वामी भीखणजी के पारिवारिक कुलगुरु थे, उनके वंशक्रम से वर्तमान में गुरांसा कौन है ?

रिक्त स्थान की पूर्ति करें:

1. चिर काल से सोई शुद्ध आचार विचार की चेतना फिर से __ हो उठी।
2. __ को उनके लिए विशेष परिश्रम करने की कभी आवश्यकता नहीं पडी।
3. __ बुद्धि और दूरदर्शिता ने उनको हर स्थान पर महत्वशील व्यक्ति बना दिया।
4. पति पत्नी दोनों ही अत्यन्त भद्र और धार्मिक प्रकृति के थे। ऐसे माता पिता की संतान धर्म निष्ठ और __ हो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।
5. वैधव्य जीवन के एकमात्र सहारे अपने प्रिय पुत्र को दीक्षा की अनुमति दे कर उन्होंने __ की त्यागवृत्ति का एक ज्वलन्त उदाहरण रख दिया।

पहले प्रश्न के उत्तर के अंतिम अक्षर से अगला उत्तर शुरू होगा:

1. गुरांसा दाखूलालजी की वंशावली के अनुसार भिखण जी के पूर्वजों में से 13 दिन का संथारा किसे आया....
2. धन्नाशाह के चार पुत्रों में से पचपदरा में बसने वाले पुत्र का नाम....
3. भीखणजी के भाई का नाम....
4. ससुराल जाने पर किस के लिए गालियाँ गाई जाती है....
5. दीक्षा से पूर्व परीक्षण-काल में स्वामीजी ने कैर का नीरस जल पीकर किस पर नियंत्रण की परीक्षा कि....

जून 2026 माह की महिला मंडल क्विज के सही जवाब

सही उत्तर लिखें		रिक्त स्थान की पूर्ति करें	जोड़ियाँ मिलाओ...
1. मेवाड़	6. श्रावक व्रत	1. संगठन क्षमता	1. तेरहवें
2. तारण स्वामी	7. 2323	2. दुष्षम	2. तेरापंथ
3. स्वामीजी, भिखणजी	8. भट्टारक	3. धूमकेतु	3. तेरह
4. लोकांशाह	9. भस्मराशि	4. पुरातनता	4. तारण-तरण
5. रत्नत्रयी	10. आगमिक	5. संघटन	5. तत्वज्ञान

सन्दर्भ पुस्तक: तेरापंथ का इतिहास (पेज संख्या...33 से 45)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

संयोजिका	सह संयोजिका
श्रीमती अर्चना भंडारी	श्रीमती मीना बड़ाला
98100 11500	93209 53145

Google Form Link:
https://forms.gle/JmgdEVas5QRkFhkd8

कन्या मंडल Quiz

Crosswords:

संदर्भ: तेरापंथ प्रबोध पर आधारित वर्ग पहेली पद्य संख्या 81-90

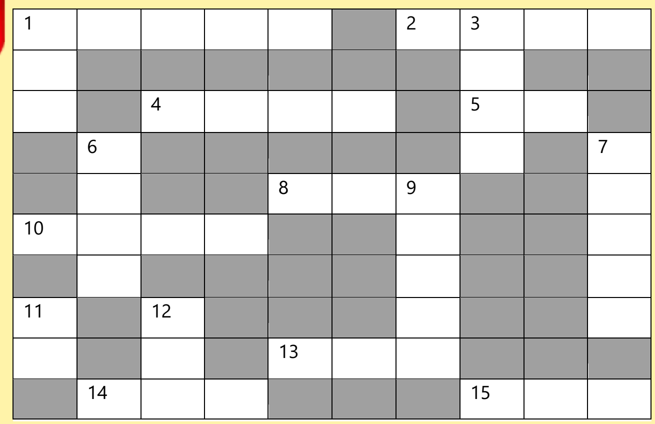

बांए से दांए (Left to Right)

1. साधु साध्वियों के आने के अहसास से स्वामी जी को कौन सा ज्ञान उत्पन्न हुआ लगता है (5)
2. शरीर का पराक्रम घटने पर स्वामीजी ने युवाचार्य के अलावा और किन्हें याद किया (4)
4. भीखण जी ने कौन सा पाठ पढकर तिविहार संथारा स्वीकार किया (4)
5. जिण-तिण ने मत मूंडज्यो ये पंक्ति स्वामी जी ने किस संदर्भ में कही (2)
8. रायचन्द जी की बात सुनकर स्वामीजी ने क्या स्वीकार करने की बात कही (3)
10. टोलां और किससे संपर्क टालना है (4)
13. "रायचन्द कह रहा है पुद्‌गल क्षीण हो रहा है," भारीमाल जी-खेतसीजी से, यह बात किन्होंने कही (3)
14. दिन का कितना समय बीतने पर स्वामीजी ने जलग्रहण किया (3)
15. आचार्य भिक्षु ने किस तिथी को धर्मसंघ के नाम अंतिम संदेश दिया (3)

ऊपर से नीचे (Top to Bottom)

1. देर लखावे स्वामीजी रे कहते ही क्या डोल उठा (3)
3. स्वामीजी के गुणगान करते हुए लोग अपनी किसकी सराहना कर रहे थे (4)
6. मुहुरत बाद वेणोजी व और कौन से मुनि आये (4)
7. स्वामीजी के देह परित्याग के दिन कौन सा वार था (5)
9. कौन से मुनि बोले गुरुदेव कृपा कर मुझे दर्शन दें (5)
11. सन्तों के दर्शन कर किसने बोला मेरा काम पूरा हो गया (2)
12. भीखण जी के लिए कितने खण्डों वाली बैंकुठी का निर्माण हुआ (3)

जून 2026 माह की कन्यामंडल वर्ग पहेली के सही जवाब

बाएं से दाएं		ऊपर से नीचे	
1. आठ सौ	9. मोह	1. आयुष्य	9. मोक्ष
3. सतयुगी	12. पांचम	2. दौलतसिंह	10. बहुआयामी
4. लक्ष्य	15. जनपद	7. प्रतिक्रमण	11. रायचंद जी
5. उद्योत	16. सावन	8. कांठा	13. जैन
6. छट्ठ			14. भाद्रव

संयोजिका श्रीमती मंजू भूतोड़िया 93121 73434

Google Form Link:
https://forms.gle/udFgyxF1EmxKP2oY8

प्रश्नोत्तरी भरकर भेजने की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2026 है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को प्रदत्त अनुदान

समस्त अनुदानदाताओं का हार्दिक आभार

₹1,50,000/- तेरापंथ महिला मंडल, अहमदाबाद	₹51,000/- श्रीमती सुमन संजयजी मरलेचा, पुणे	₹51,000/- श्रीमान विनोदजी घोड़ावत, जयसिंहपुर
₹51,000/- श्रीमान संजयजी घोड़ावत, जयसिंहपुर	₹31,000/- जगादरी यमुनानगर महिला मंडल	₹31,000/- कालावाली महिला मंडल
₹31,000/- सिरसा हरियाणा महिला मंडल	₹21,000/- श्रीमती बबीता नाहर, यमुनानगर	₹11,000/- चौपड़ा परिवार, जगादरी यमुनानगर
₹11,000/- गोलछा परिवार, जगादरी यमुनानगर	₹11,000/- पर्वत पाटिया महिला मंडल, पर्वत पाटिया	₹5,100/- श्रीमती रेणु जैन (भावना चौका)
₹3,100/- वाराणसी महिला मंडल, वाराणसी	₹3,100/- श्रीमती सरोज जैन, हिसार	₹2,100/- श्रीमती अंजू दुगड़
₹2,100/- श्रीमती जयश्री पगारिया, पटना	₹2,100/- राजवाला हरियाणा महिला मंडल, हरियाणा	₹1,100/- श्रीमती निर्मला मित्तल

समस्त अनुदानदाताओं का हार्दिक आभार।

महामंत्री कार्यालय
Rachna Hiran
604 Thakur Jewel,
Near HDFC Bank,
Thakur Village, Kandivali East,
Mumbai - 400101
Mob.: 9821385587
Email: rachnapritam@yahoo.co.in

नारीलोक

नारीलोक प्राप्ति हेतु संपर्क सूत्र
Nutan Lodha
Mob.: 98693 71153

कोषाध्यक्ष
Mamta Ranka
Indra Chowk New Line,
Gangashahar,
Bikaner- 334401
Mob.: 9414142924
Email: mamtaranka002@gmil.com

www.facebook.com/abtmmjain/
www.abtmm.org
www.youtube.com/channel/UCMnsuMEyhhQWvDbnrfwpdEQ